International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2)
www.granthaalayah.com

Original Article

THE NATURE OF EDUCATION IN HINDI NOVELS: IDEOLOGICAL, CULTURAL, AND SOCIAL PERSPECTIVES WITH SPECIAL REFERENCE TO THE NOVELS OF PREMCHAND AND SHRILAL SHUKLA

हिंदी उपन्यासों में शिक्षा का स्वरूप: वैचारिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य (प्रेमचंद और श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में)

Nandkishor [1*], **Gulab Singh Verma** [1]
[1] Department of Hindi, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India

ABSTRACT

English: This research paper presents an analysis of the evolving nature of education in Hindi novels from ideological, cultural, and social perspectives. Education is not merely a medium for acquiring knowledge; it serves as the foundation for social change and nation-building. This study centers on selected novels by two prominent novelists—Premchand (a doyen of the realist tradition) and Shrilal Shukla (a towering figure of satirical realism). The diverse dimensions of education have been examined in depth within Premchand's *Sevasadan*, *Karmabhumi*, and *Godan*, as well as Shrilal Shukla's *Sooni Ghati Ka Suraj* and *Raag Darbari*. The study concludes that while in Premchand's works, education emerges as a medium for combating social evils and fostering self-awakening, Shrilal Shukla employs satire to expose the disintegration of education's idealistic essence due to corruption within educational institutions and the pursuit of political self-interest.

Hindi: यह शोधपत्र हिंदी उपन्यासों में शिक्षा के बदलते स्वरूप का वैचारिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न होकर सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र-निर्माण का आधार है। इस अध्ययन में दो महत्वपूर्ण उपन्यासकारों—प्रेमचंद (यथार्थवादी परंपरा के हस्ताक्षर) और श्रीलाल शुक्ल (व्यंग्य-यथार्थवाद के शिखर पुरुष)—के चुनिंदा उपन्यासों को केंद्र में रखा गया है। प्रेमचंद के 'सेवासदन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' तथा श्रीलाल शुक्ल के 'सूनी घाटी का सूरज' और 'राग दरबारी' में शिक्षा के विविध आयामों का गहनता से अध्ययन किया गया है। शोध का निष्कर्ष है कि जहाँ प्रेमचंद के यहाँ शिक्षा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष और आत्म-जागरण का माध्यम बनकर उभरती है, वहीं श्रीलाल शुक्ल के यहाँ शिक्षा संस्थानों के भ्रष्टाचार और राजनीतिक स्वार्थों के कारण उसके आदर्श स्वरूप के विघटन को व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया गया है।

Keywords: Hindi Novels, Nature of Education, Premchand, Shrilal Shukla, Social Change, Satire, Realism, Sevasadan, Godan, Raag Darbari Remove Raag Darbari हिंदी उपन्यास, शिक्षा का स्वरूप, प्रेमचंद, श्रीलाल शुक्ल, सामाजिक परिवर्तन, व्यंग्य, यथार्थवाद, सेवासदन, गोदान, राग दरबारी

*Corresponding Author:
Email address: Nandkishor (nandkishorsahu1208@gmail.com), Gulab Singh Verma (gulabsinghverma65@gmail.com)

Received: 16 January 2026; **Accepted:** 12 February 2026; **Published** 17 March 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2.2026.6833
Page Number: 115-121
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के विशाल परिदृश्य में उपन्यास विधा ने सामाजिक यथार्थ के चित्रण का सर्वाधिक सशक्त माध्यम का कार्य किया है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार, "हिंदी उपन्यास का इतिहास मूलतः भारतीय समाज के विकास का ही इतिहास है" Nagendra (1975), पृ. 15। उपन्यास समाज का दर्पण होता है और उसमें समाज के विभिन्न पक्षों का यथार्थ चित्रण मिलता है। शिक्षा और समाज का अंतर्संबंध मानव सभ्यता के विकास के साथ ही जुड़ा हुआ है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के विकास का माध्यम है, अपितु समाज के उत्थान और राष्ट्र के निर्माण का भी आधार है।

शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "शिक्षा उस पूर्णता की अभिव्यक्ति है जो मनुष्य में पहले से विद्यमान है" (विवेकानंद, 1894, Satyendra (2005) में, पृ. 89। महात्मा गांधी ने शिक्षा को व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया बताया Gandhi (1937), पृ. 45। हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में शिक्षा और समाज के इस अटूट संबंध को विभिन्न कोणों से प्रस्तुत किया है।

हिंदी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंद का युग सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेमचंद को "जन-जागरण के अग्रदूत" की संज्ञा दी है Shukla (1940), पृ. 412। विद्वान कृपा शांडिल्य के अनुसार, प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षा का प्रश्न सामाजिक पुनरुत्थान के व्यापक संदर्भ में उभरकर सामने आता है Shandilya (2016), पृ. 275। उनके साहित्य में दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छुआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता जैसे उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद का जीवन स्वयं शिक्षा के संघर्षों से भरा हुआ था। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार, "प्रेमचंद के जीवन का प्रारंभिक संघर्ष ही उनके शैक्षिक चिंतन का आधार बना" Goenka (1980), पृ. 34। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए और नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। 1919 में उन्होंने बी.ए. पास किया। यह संघर्षपूर्ण जीवन उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनकर उभरती है। 'सेवासदन' (1918) में वेश्या-समस्या और स्त्री-शिक्षा के प्रश्न को केंद्र में रखा गया है। विदुषी कृपा शांडिल्य का मत है कि "सेवासदन में प्रेमचंद ने गांधीवादी राष्ट्रवादी विचारधारा को अपनाते हुए भारतीय नारी के लिए एक नए स्थान की परिकल्पना की है" Shandilya (2016), पृ. 288। 'कर्मभूमि' (1931) में शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना के संबंध को रेखांकित किया गया है। उनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'गोदान' (1936) है, जिसमें ग्रामीण शिक्षा के अभाव और शहरी शिक्षित वर्ग के द्वंद्व को बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में जहाँ एक ओर शिक्षा के प्रसार की आकांक्षा थी, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण भारत में शिक्षा की दयनीय दशा ने साहित्यकारों को चिंतित किया। प्रेमचंद के समय में शिक्षा जहाँ सामाजिक पुनरुत्थान का सपना दिखाती है, वहीं श्रीलाल शुक्ल के समय में यही शिक्षा व्यवस्था राजनीतिक स्वार्थों और भ्रष्टाचार का अखाड़ा बनकर रह गई है।

श्रीलाल शुक्ल के साहित्यिक योगदान पर टिप्पणी करते हुए प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने लिखा है: "स्वातंत्रयोत्तर भारतीय समाज को समझने के लिए जिन रचनाकारों ने अपने तर्क निर्मित किए हैं, उनमें श्रीलाल शुक्ल का महत्त्व अद्वितीय है। विलक्षण गद्यकार श्रीलाल शुक्ल वस्तुतः हमारे समय का विदग्ध भाष्य रचते हैं" Singh (2003), पृ. 78। उनका उपन्यास 'राग दरबारी' (1968) हिंदी साहित्य की अमर कृति है, जिसमें ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

वनश्री के अनुसार, "'राग दरबारी' ग्रामीण शिक्षा की अक्षमता का चित्र 'बेपरवाह व्यंग्य' के साथ प्रस्तुत करता है, जहाँ शिक्षकों की नियुक्ति में 'संपर्क' (सिफारिश) प्रमुख भूमिका निभाता है और शिक्षक-छात्र संबंधों में गाली-गलौज तथा जातिगत ताने शामिल होते हैं" Vanashree (2023), पृ. 112। यह शोध प्रेमचंद के आदर्शवादी शिक्षा-दृष्टिकोण और श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य-यथार्थवादी शिक्षा-चित्रण के बीच के इसी द्वंद्व का विश्लेषण करता है।

सैद्धांतिक अधिष्ठान एवं शोध पद्धति

शिक्षा की अवधारणा और उद्देश्य

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है 'सीखना' या 'ज्ञान प्राप्त करना'। प्राचीन भारतीय विचारकों ने शिक्षा को 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात वह शिक्षा जो मुक्ति दिलाने वाली हो, कहा है। आधुनिक संदर्भ में शिक्षा का अर्थ व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास की समग्र प्रक्रिया से है। प्रेमचंद के संदर्भ में देखें तो उन्होंने शिक्षा को केवल औपचारिक ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं माना। उनके उपन्यासों में शिक्षा का जो स्वरूप उभरकर सामने आता है, वह व्यक्ति के चारित्रिक विकास और सामाजिक चेतना से जुड़ा हुआ है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक और तुलनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में प्रेमचंद के उपन्यास 'सेवासदन' (1918), 'कर्मभूमि' (1931), 'गोदान' (1936) तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' (1957) और 'राग दरबारी' (1968) को लिया गया है। द्वितीयक स्रोतों में इन उपन्यासों से जुड़ी समीक्षाएँ, शोध-पत्र और आलोचनात्मक सामग्री शामिल हैं।

प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षा और समाज

प्रेमचंद का जीवन और शैक्षिक चिंतन

प्रेमचंद (1880-1936) का जीवन स्वयं शिक्षा के संघर्षों से भरा हुआ था। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार, "प्रेमचंद के जीवन का प्रारंभिक संघर्ष ही उनके शैक्षिक चिंतन का आधार बना" Goenka (1980), पृ. 34। आठ वर्ष की आयु में माता और सोलह वर्ष में पिता के देहांत के बाद गरीबी और अभाव के बीच उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। 1898 में मैट्रिक के बाद वे शिक्षक नियुक्त हुए और नौकरी के साथ ही 1919 में बी.ए. पास किया।

प्रेमचंद के शैक्षिक चिंतन पर प्रकाश डालते हुए डॉ. इंद्रनाथ मदान लिखते हैं कि "एक मिशनरी स्कूल में उनकी प्रारंभिक शिक्षा ने उन्हें ईसाई मिशनरियों के शैक्षिक प्रयासों से परिचित कराया, जिसका प्रभाव उनके लेखन में देखा जा सकता है" Madan (1976), पृ. 23। यह संघर्षपूर्ण जीवन उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है। प्रेमचंद स्वयं अपने एक लेख में लिखते हैं, "मैंने शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि जीवन को समझने की कला के रूप में देखा" प्रेमचंद (1934), Gupta (1998) में, पृ. 67।

'सेवासदन' (1918) में स्त्री-शिक्षा और सामाजिक पुनर्वास

'सेवासदन' प्रेमचंद का पहला प्रमुख हिंदी उपन्यास है, जिसमें वेश्या-समस्या और स्त्री-शिक्षा के प्रश्न को केंद्र में रखा गया है। विद्वान कृपा शांडिल्य के अनुसार, "यह उपन्यास विवाह संस्था की आलोचना करता है और वेश्या के माध्यम से कामुकता, सम्मान और स्त्रीत्व के वैकल्पिक त्रिकोण की संभावना को रेखांकित करता है" Shandilya (2016), पृ. 275।

उपन्यास की नायिका सुमन के माध्यम से दिखाया गया है कि कैसे शिक्षा के अभाव में स्त्री सामाजिक विसंगतियों का शिकार बनती है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार, "सुमन का चरित्र उस युग की उस नारी का प्रतिनिधित्व करता है जो शिक्षा के अभाव में अपने अधिकारों से वंचित रह जाती है" Singh (1985), पृ. 112। उपन्यास के अंत में सुमन 'सेवासदन' में शरण लेती है, जो वेश्याओं के पुनर्वास का संस्थान है।

विदुषी कृपा शांडिल्य का मत है कि "अंततः यह उपन्यास गांधीवादी राष्ट्रवादी विचारधारा को अपनाते हुए भारतीय नारी के लिए एक नए स्थान की परिकल्पना करता है" Shandilya (2016), पृ. 288। इस प्रकार 'सेवासदन' में शिक्षा को स्त्री-मुक्ति और सामाजिक पुनर्वास के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

'कर्मभूमि' (1931) में शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना

'कर्मभूमि' में शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना के संबंध को रेखांकित किया गया है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "इस उपन्यास में प्रेमचंद ने शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है, वह अद्वितीय है" Sharma (1981), पृ. 156।

उपन्यास का नायक अमरकांत स्कूल से इसलिए भाग जाता है क्योंकि वह फीस नहीं भर सकता। डॉ. इंद्रनाथ मदान के अनुसार, "यह दृश्य उस समय की शिक्षा प्रणाली की विफलता को दर्शाता है जो गरीबों के लिए सुलभ नहीं थी" Madan (1976), पृ. 89। अमरकांत के चरित्र के माध्यम से शिक्षा के नैतिक और सामाजिक उद्देश्यों पर बल दिया गया है।

प्रो. नगेंद्र का मत है कि "प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' में पाश्चात्य शिक्षा पर तीखा व्यंग्य किया है, जिसका आधार केवल व्यवसायिक स्वार्थ है" Nagendra (1975), पृ. 234। अमरकांत का चरित्र उस शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो समाज की सेवा को ही अपना कर्म मानता है।

'गोदान' (1936) में ग्रामीण-शहरी शिक्षा का द्वंद्व

'गोदान' प्रेमचंद का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है, जो एक गरीब किसान होरी की कथा है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "'गोदान' में ग्रामीण शिक्षा के अभाव और शहरी शिक्षित वर्ग के द्वंद्व को बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है" Sharma (1981), पृ. 298।

होरी के माध्यम से दिखाया गया है कि कैसे शिक्षा के अभाव में ग्रामीण समाज शोषण का शिकार बनता है। वनश्री के अनुसार, "ग्रामीण भारत में निरक्षरता गरीबी और पिछड़ेपन को बनाए रखने का एक प्रमुख कारण है और असमान शिक्षा असमान अवसरों को जन्म देती है" Vanashree (2023), पृ. 108।

दूसरी ओर, मालती और मेहता जैसे शिक्षित शहरी पात्र शिक्षा के उस स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार, "मालती और मेहता के माध्यम से प्रेमचंद ने शिक्षित वर्ग की सामाजिक जिम्मेदारी को रेखांकित किया है" Singh (1985), पृ. 178। इस प्रकार 'गोदान' में ग्रामीण-शहरी शिक्षा का द्वंद्व भारतीय समाज की विडंबना को उजागर करता है।

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में शिक्षा और समाज

श्रीलाल शुक्ल का जीवन और व्यंग्य-दृष्टि

प्रख्यात साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल (1925-2011) का जन्म लखनऊ जिले के अतरौली गाँव में हुआ था। उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए डॉ. धीरेन्द्र शर्मा लिखते हैं, "उनका व्यक्तित्व सहज, विनोदी और अनुशासनप्रिय था, जो उनके साहित्य में भी झलकता है" Sharma (2012), पृ. 15।

श्रीलाल शुक्ल ने व्यंग्य को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि समाज की विसंगतियों को उजागर करने का सशक्त हथियार बनाया। प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह के अनुसार, "श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य कटु नहीं, बल्कि गुदगुदाता हुआ भी करारी चोट करता है" Singh (2003), पृ. 79।

'सूनी घाटी का सूरज' (1957) में आदर्शवादी शिक्षक

'सूनी घाटी का सूरज' श्रीलाल शुक्ल का पहला उपन्यास है। यह एक आदर्शवादी शिक्षक की कहानी है, जो अपने सिद्धांतों और आदर्शों के साथ समझौता नहीं करता। डॉ. इन्दु शेखर के अनुसार, "उपन्यास का नायक एक ऐसा शिक्षक है जो शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानता है" Shekhar (2005), पृ. 67।

यह चरित्र 'राग दरबारी' के भ्रष्ट शिक्षकों के बिल्कुल विपरीत है। उपन्यास में आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व को बड़ी संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है। डॉ. धीरेन्द्र शर्मा के अनुसार, "इस उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने आदर्शवादी शिक्षक की अवधारणा को मूर्त रूप दिया है, जो बाद में 'राग दरबारी' में पूरी तरह ध्वस्त हो जाती है" Sharma (2012), पृ. 89।

'राग दरबारी' (1968) में शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य

'राग दरबारी' श्रीलाल शुक्ल का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है, जिसके लिए उन्हें 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के बिगड़ते मूल्यों को उजागर करता है" Singh (2003), पृ. 82।

प्रो. अपूर्वानंद का मत है कि "यह उपन्यास अपराधियों, व्यापारियों, पुलिस और राजनेताओं के बीच भ्रष्ट गठजोड़ के सामने बुद्धिजीवियों की लाचारी को दर्शाता है" Apoorvanand (2010), पृ. 45।

शिवपालगंज इंटर कॉलेज: शिक्षा के बाजारीकरण का प्रतीक

उपन्यास में शिवपालगंज इंटर कॉलेज गाँव की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र है। वैद्य जी, जो कॉलेज के प्रबंधक हैं, इस संस्थान का उपयोग अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए करते हैं। वनश्री के अनुसार, "ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के एक अध्ययन में कहा गया है कि 'राग दरबारी' उच्च स्तर पर ग्रामीण शिक्षा की अक्षमता का चित्र 'बेपरवाह व्यंग्य' के साथ प्रस्तुत करता है" Vanashree (2023), पृ. 112।

शिक्षकों का चित्रण और भ्रष्टाचार

उपन्यास में प्रधानाचार्य लंगड़ सिंह का चरित्र भ्रष्टाचार का प्रतीक है। डॉ. इन्दु शेखर के अनुसार, "उनका नाम 'लंगड़' उनकी नैतिक कमजोरी का प्रतीक है" Shekhar (2005), पृ. 112। वे वैद्य जी के साथ गठजोड़ करके अपनी स्थिति सुरक्षित रखते हैं। दूसरी ओर, बद्री जैसे शिक्षक हैं जो अपेक्षाकृत ईमानदार हैं लेकिन बदलाव लाने में असमर्थ हैं।

वनश्री का कहना है कि "बिहार के सरकारी स्कूलों के संदर्भ में देखा जाए तो शिक्षकों की नियुक्ति में 'संपर्क' (सिफारिश) प्रमुख भूमिका निभाता है, शिक्षकों की अनुपस्थिति को फर्जी रजिस्टरों द्वारा प्रबंधित किया जाता है, और शिक्षक-छात्र संबंधों में गाली-गलौज और जातिगत ताने शामिल होते हैं" Vanashree (2023), पृ. 115।

उपन्यास में 'गुरुजी' की उक्ति, "पढ़ लिखकर क्या करेगा, कभी कौवा मोर के पंख लगा सकता है?" ग्रामीण शिक्षा की निरर्थकता को दर्शाती है। डॉ. धीरेन्द्र शर्मा के अनुसार, "यह वाक्य शिक्षा के प्रति ग्रामीण समाज की हीन भावना को व्यक्त करता है" Sharma (2012), पृ. 156।

परीक्षा प्रणाली पर व्यंग्य

'राग दरबारी' में परीक्षा प्रणाली पर जो व्यंग्य किया गया है, वह अत्यंत मार्मिक है। रुप्पन बाबू, जो वैद्य जी के छोटे बेटे हैं, पिछले 10 वर्षों से दसवीं कक्षा में हैं क्योंकि वे कॉलेज छोड़ना नहीं चाहते, जिसके उनके पिता प्रबंधक हैं। प्रो. अपूर्वानंद के अनुसार, "यह दृश्य परीक्षा प्रणाली की विफलता को उजागर करता है" Apoorvanand (2010), पृ. 78।

उपन्यास में नकल की व्यवस्था पहले से योजनाबद्ध तरीके से की जाती है, और परीक्षा केंद्रों पर नकल माफिया सक्रिय हैं। डॉ. इन्दु शेखर का मत है कि "श्रीलाल शुक्ल ने परीक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करके यह दिखाया है कि कैसे शिक्षा का मूल स्वरूप ही समाप्त हो गया है" Shekhar (2005), पृ. 134।

तुलनात्मक विश्लेषण: प्रेमचंद से श्रीलाल शुक्ल तक

प्रेमचंद और श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में शिक्षा के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन हिंदी साहित्य में शिक्षा-चिंतन के विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार, "प्रेमचंद से श्रीलाल शुक्ल तक की यात्रा भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य की यात्रा है" Nagendra (1975), पृ. 342। निम्नलिखित बिंदुओं पर इस तुलनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया जा सकता है:

आयाम	प्रेमचंद के उपन्यास	श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास
शिक्षा का उद्देश्य	सामाजिक पुनरुत्थान, नैतिक जागरण और राष्ट्रीय चेतना का विकास। Sharma (1981), पृ. 156	शिक्षा संस्थान राजनीतिक स्वार्थ और भ्रष्टाचार का साधन बनकर रह गए हैं। Singh (2003), पृ. 82
शिक्षक का चरित्र	आदर्शवादी (यद्यपि संघर्षशील), समाज सुधारक। Goenka (1980), (पृ. 112)	भ्रष्ट, स्वार्थी और राजनीतिक दबाव में काम करने वाला ('राग दरबारी'); दुर्लभ आदर्शवादी ('सूनी घाटी का सूरज')। Sharma (2012), पृ. 89
ग्रामीण शिक्षा	शिक्षा के अभाव में ग्रामीण शोषित हैं; शिक्षा मुक्ति का मार्ग। Vanashree (2023), पृ. 108 ग्रामीण शिक्षा संस्थान पूरी तरह विफल;	भ्रष्टाचार और राजनीति का अखाड़ा। Vanashree (2023), पृ. 112
स्त्री-शिक्षा	स्त्री -शिक्षा को सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का माध्यम माना गया। Shandilya (2016), पृ. 275	स्त्री-शिक्षा का प्रश्न गौण; मुख्यतः ग्रामीण राजनीति और शिक्षा-भ्रष्टाचार पर केंद्रित। Shekhar (2005), पृ. 134
शैली	यथार्थवादी, मार्मिक और संवेदनशील। Shukla (1940), पृ. 412	व्यंग्य-यथार्थवादी, करारी चोट करता हुआ विनोद। Singh (2003), पृ. 79

शिक्षा के उद्देश्य में अंतर

प्रेमचंद के यहाँ शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक पुनरुत्थान और राष्ट्रीय चेतना का विकास है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "प्रेमचंद शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का माध्यम मानते थे" Sharma (1981), पृ. 156। वहीं श्रीलाल शुक्ल के यहाँ शिक्षा संस्थान अपने मूल उद्देश्य से भटककर राजनीतिक स्वार्थ और भ्रष्टाचार के साधन बन गए हैं। प्रो. अपूर्वानंद के मत में, "श्रीलाल शुक्ल ने दिखाया है कि कैसे शिक्षा का आदर्श स्वरूप स्वातंत्र्योत्तर भारत में ध्वस्त हो गया" Apoorvanand (2010), पृ. 56।

शिक्षक के चरित्र का विकास

प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षक आदर्शवादी और समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत होते हैं। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार, "प्रेमचंद के शिक्षक पात्र स्वयं संघर्षशील होते हुए भी समाज को दिशा देते हैं" Goenka (1980), पृ. 112। इसके विपरीत श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' में शिक्षक भ्रष्ट, स्वार्थी और राजनीतिक दबाव में काम करने वाले हैं। डॉ. धीरेन्द्र शर्मा के अनुसार, "श्रीलाल शुक्ल ने 'सूनी घाटी का सूरज' में आदर्शवादी शिक्षक का चित्रण किया था, किंतु 'राग दरबारी' में वही आदर्श धराशायी हो जाता है" Sharma (2012), पृ. 89।

ग्रामीण शिक्षा का चित्रण

प्रेमचंद के यहाँ ग्रामीण शिक्षा के अभाव को दिखाया गया है। वनश्री के अनुसार, "प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षा के अभाव में ग्रामीण शोषित हैं और शिक्षा उनके लिए मुक्ति का मार्ग है" Vanashree (2023), पृ. 108। श्रीलाल शुक्ल के यहाँ ग्रामीण शिक्षा संस्थान पूरी तरह विफल हो चुके हैं। वनश्री का ही मत है कि "श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' में ग्रामीण शिक्षा संस्थान भ्रष्टाचार और राजनीति का अखाड़ा बन गए हैं" Vanashree (2023), पृ. 112।

स्त्री-शिक्षा का प्रश्न

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। विदुषी कृपा शांडिल्य के अनुसार, "प्रेमचंद ने 'सेवासदन' में स्त्री-शिक्षा को सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का माध्यम माना है" Shandilya (2016), पृ. 275। वहीं श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में स्त्री-शिक्षा का प्रश्न गौण है। डॉ. इन्दु शेखर के अनुसार, "श्रीलाल शुक्ल मुख्यतः ग्रामीण राजनीति और शिक्षा-भ्रष्टाचार पर केंद्रित हैं, स्त्री-शिक्षा उनके उपन्यासों का केंद्रीय विषय नहीं है" Shekhar (2005), पृ. 134।

शैलीगत अंतर

प्रेमचंद की शैली यथार्थवादी, मार्मिक और संवेदनशील है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेमचंद को "जन-जागरण के अग्रदूत" की संज्ञा दी है Shukla (1940), पृ. 412। श्रीलाल शुक्ल की शैली व्यंग्य-यथार्थवादी है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य करारी चोट करता हुआ विनोद है" Singh (2003), पृ. 79।

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

हिंदी उपन्यासों में शिक्षा का स्वरूप समय के साथ बदलता हुआ दिखाई देता है। प्रेमचंद के यहाँ शिक्षा सामाजिक परिवर्तन, स्त्री-मुक्ति और राष्ट्रीय चेतना के जागरण का सपना है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "प्रेमचंद के उपन्यास शिक्षा के अभाव में होने वाले शोषण और शिक्षा के माध्यम से संभव होने वाले पुनरुत्थान की कहानियाँ हैं" Sharma (1981), पृ. 302।

श्रीलाल शुक्ल के यहाँ यही शिक्षा व्यवस्था स्वातंत्र्योत्तर भारत में अपने मूल उद्देश्य से भटक चुकी है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "'राग दरबारी' में शिक्षा संस्थान राजनीति, भ्रष्टाचार और स्वार्थ का अखाड़ा बन गए हैं" Singh (2003), पृ. 82। यह केवल शिवपालगंज की कहानी नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों की ग्रामीण शिक्षा की दयनीय दशा का प्रतिनिधित्व करता है। वनश्री के अनुसार, "ग्रामीण भारत में शिक्षकों की अनुपस्थिति, जर्जर भवन और जातिगत भेदभाव आम बात है" Vanashree (2023), पृ. 115।

दोनों उपन्यासकारों के यहाँ शिक्षा का जो स्वरूप उभरकर सामने आता है, वह आज भी प्रासंगिक है। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार, "प्रेमचंद के आदर्शवादी शिक्षक की आवश्यकता आज भी उतनी ही है, जितनी श्रीलाल शुक्ल के भ्रष्ट शिक्षकों पर व्यंग्य की" Goenka (1980), पृ. 156।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1) प्रेमचंद के उपन्यासों में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'सेवासदन' में स्त्री-शिक्षा, 'कर्मभूमि' में राष्ट्रीय चेतना और 'गोदान' में ग्रामीण-शहरी शिक्षा के द्वंद्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है।
2) श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था के विघटन का यथार्थ चित्रण मिलता है। 'राग दरबारी' में शिक्षा संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक हस्तक्षेप और शिक्षकों की विफलता को व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया गया है।
3) प्रेमचंद से श्रीलाल शुक्ल तक की यात्रा भारतीय समाज में शिक्षा के आदर्श स्वरूप से यथार्थ स्वरूप तक की यात्रा है। प्रो. नगेंद्र के अनुसार, "यह यात्रा हिंदी उपन्यासों में शिक्षा-चिंतन के विकास को दर्शाती है" Nagendra (1975), पृ. 345।

शोध का महत्त्व

यह शोध निम्नलिखित दृष्टियों से महत्वपूर्ण है:

प्रथम, यह हिंदी उपन्यासों में शिक्षा के स्वरूप का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। द्वितीय, यह प्रेमचंद और श्रीलाल शुक्ल के शैक्षिक चिंतन की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है। तृतीय, यह वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं को समझने में सहायक है। चतुर्थ, यह साहित्य और समाज के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है।

भविष्य की शोध संभावनाएँ

प्रस्तुत शोध के आधार पर भविष्य में निम्नलिखित दिशाओं में शोध किए जा सकते हैं:

1) हिंदी के अन्य उपन्यासकारों (जैसे फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल आदि) के यहाँ शिक्षा का स्वरूप
2) हिंदी कहानियों में शिक्षा का चित्रण
3) स्त्री-लेखिकाओं के उपन्यासों में शिक्षा का स्वरूप
4) दलित साहित्य में शिक्षा का प्रश्न
5) समकालीन हिंदी उपन्यासों में शिक्षा के बदलते आयाम

समग्र मूल्यांकन

यह अध्ययन बताता है कि साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना जागृत करने और शिक्षा जैसे मूलभूत प्रश्नों पर पुनर्विचार करने का भी सशक्त माध्यम है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "प्रेमचंद और श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास हमें शिक्षा के वास्तविक स्वरूप पर चिंतन के लिए विवश करते हैं" Sharma (1981), पृ. 310।

प्रेमचंद का आदर्शवादी दृष्टिकोण और श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य-यथार्थवादी दृष्टिकोण - दोनों ही हिंदी साहित्य में शिक्षा-चिंतन के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन दोनों के अध्ययन से न केवल हिंदी उपन्यासों के विकास को समझा जा सकता है, बल्कि भारतीय समाज में शिक्षा की स्थिति और उसकी समस्याओं को भी रेखांकित किया जा सकता है।

REFERENCES

Anonymous. (2005). Raag Darbari (Novel) (राग दरबारी). In Wikipedia.

Anonymous. (2013). Vibrant Voice (जीवंत स्वर). India Today.

Anonymous. (2024). Raag Darbari: Summary, Themes, Characters (राग दरबारी: सारांश, विषय, पात्र). Literary Sphere.

Anonymous. (n.d.). From the Village Into the World: Premchand in world literature and Translation Studies Contexts (गांव से विश्व तक: प्रेमचंद का वैश्विक साहित्यिक संदर्भ). IIAS Asia.

Anonymous. (n.d.). Raag Darbari [Paperback] Shrilal Shukla (राग दरबारी). Goodreads.

Apoorvanand. (2010). Hindi novel: Changing Landscape (हिंदी उपन्यास: बदलता परिदृश्य). Vani Prakashan.

Gandhi, M. K. (1937, September 11). Harijan magazine, 11 September 1937 Issue (हरिजन, 11 सितंबर 1937 अंक). Harijan.

Goenka, K. K. (1980). Premchand: Life and Literature (प्रेमचंद: जीवन और साहित्य). Rajkamal Prakashan.

Gupta, R. (1998). Letters of Premchand (प्रेमचंद के पत्र). Vani Prakashan.

Madan, I. (1976). Premchand: Art and Thought (प्रेमचंद: कला और चिंतन). Rajkamal Prakashan.

Nagendra. (1975). History of Hindi Novel (हिंदी उपन्यास का इतिहास). National Publishing House.

Premchand. (2022). Premashram (प्रेमाश्रम). Maple Press.

Raj, J. G. (2016). Tracing the Rights of the Minorities Through Select Works of Premchand (प्रेमचंद के चयनित कार्यों के माध्यम से अल्पसंख्यकों के अधिकारों का अध्ययन). SlideShare.

Roy, A., and Singh, U. K. (2018). Raag Darbari Tells us That Trust in Political Authority can Never be Absolute (राग दरबारी और राजनीतिक सत्ता पर अविश्वास).

Satyendra. (2005). Philosophy of Indian education (भारतीय शिक्षा के दर्शन). Vinod Pustak Mandir.

Shandilya, K. (2016). The Widow, the Wife, and the Courtesan: A Comparative Study of Social Reform in Premchand's Sevasadan (सेवासदन में सामाजिक सुधार का तुलनात्मक अध्ययन). Comparative Literature Studies, 53(2), 272–288.

Sharma, D. (2012). Satirical Literature of Shrilal Shukla (श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य साहित्य). Navyug Prakashan.

Sharma, R. (1981). Premchand and His Era (प्रेमचंद और उनका युग). Rajkamal Prakashan.

Shekhar, I. (2005). Novels of Shrilal Shukla: A Study (श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास: एक अध्ययन). Lokbharati Prakashan.

Shukla, R. (1940). History of Hindi Literature (हिंदी साहित्य का इतिहास). Nagari Pracharini Sabha.

Singh, B. (1985). Feminine Consciousness in Premchand's novels (प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-चेतना). Anurag Prakashan.

Singh, N. (2003). Story: New Story Movement (कहानी: नई कहानी). Rajkamal Prakashan.

Vanashree. (2023). Why do Rural Poor Continue to Remain Poor and Uneducated? (ग्रामीण गरीब क्यों गरीब और अशिक्षित रहते हैं?). In Rural India and Peasantry in Hindi Stories (105–126). Oxford University Press.